पश्चिमी नारीवाद बनाम गांधीवादी नारीवाद

Shodh Siddhi
A Multidisciplinary & Multilingual Double Blind Peer Reviewed International Research Journal
Volume: 01 | Issue: 04 [October to December : 2025], pp. 101-105

Dr. Kumari Pamila
Asst. Prof. (Political science)
A.S. College, Deoghar
Jharkhand

Abstract

यह शोध-पत्र पश्चिमी नारीवाद तथा भारतीय संदर्भ में विकसित गांधीवादी नारीवाद के बीच तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। नारीवाद को सामान्यतः एक ऐसी विचारधारा के रूप में समझा जाता है, जिसका उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना है (Hooks, 2000)।

विस्तृत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पश्चिमी नारीवाद मुख्यतः व्यक्तिगत अधिकारों, स्वतंत्रता और संस्थागत सुधारों पर आधारित है (Wollstonecraft, 1792)। इसके विपरीत, गांधीवादी नारीवाद नैतिकता, अहिंसा, आत्मबल और सामाजिक समरसता को केंद्र में रखकर स्त्री-मुक्ति की अवधारणा विकसित करता है (Gandhi, 1958)।

नारीवाद एक सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों, समानता और गरिमा की स्थापना करना है। इस शोध-पत्र में गांधीवादी नारीवाद और पश्चिमी नारीवाद की अवधारणाओं का विश्लेषण किया गया है तथा उनके बीच समानताओं और भिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। गांधीवादी नारीवाद भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, अहिंसा, सत्य और नैतिकता पर आधारित है, जबकि पश्चिमी नारीवाद मुख्यतः व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समान अधिकार और पितृसत्ता के विरोध पर केंद्रित है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि दोनों विचारधाराएँ महिलाओं की स्थिति सुधारने का प्रयास करती हैं, किंतु उनकी पद्धति और दृष्टिकोण में मौलिक अंतर है। गांधीवादी नारीवाद सामूहिक कल्याण और नैतिक शक्ति पर बल देता है, जबकि पश्चिमी नारीवाद व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देता है।

इस शोध में दोनों दृष्टिकोणों की वैचारिक पृष्ठभूमि, स्त्री-मुक्ति की अवधारणा, संघर्ष के साधनों तथा परिवार और समाज के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय परिस्थितियों में इन दोनों दृष्टिकोणों का संतुलित समन्वय अधिक व्यावहारिक और प्रभावी हो सकता है।

Keywords: नारीवाद, पश्चिमी नारीवाद, गांधीवादी नारीवाद, स्त्री-सशक्तीकरण, पितृसत्ता.

1. भूमिका (Introduction)

आधुनिक समय में नारीवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक और वैचारिक आंदोलन के रूप में स्थापित हो चुका है, जिसने महिलाओं की समानता, स्वतंत्रता और

गरिमा के प्रश्नों को केंद्र में लाया है (Hooks, 2000)। ऐतिहासिक रूप से अधिकांश समाजों में महिलाएँ पितृसत्तात्मक संरचनाओं के अधीन रही हैं, जिसके कारण शिक्षा, संपत्ति और निर्णय-निर्माण जैसे क्षेत्रों में उनकी भागीदारी सीमित रही (Kumar, 1993)।

इन्हीं असमानताओं के विरोध में नारीवादी आंदोलनों का विकास हुआ। पश्चिमी देशों में नारीवाद का उदय औद्योगिक क्रांति, लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवाधिकार आंदोलनों के साथ जुड़ा रहा (Wollstonecraft, 1792)। इसके विपरीत, भारत में यह सामाजिक सुधार आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित रहा (Kumar, 1993)।

विशेष रूप से महात्मा गांधी के विचारों ने भारतीय नारीवाद को एक नैतिक और सामाजिक दिशा प्रदान की, जिसमें अहिंसा और सामाजिक उत्तरदायित्व को प्रमुख स्थान मिला (Gandhi, 1958)।

नारीवाद का उद्भव महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और लैंगिक असमानता को समाप्त करने के उद्देश्य से हुआ। समय के साथ नारीवाद के विभिन्न रूप विकसित हुए, जिनमें पश्चिमी नारीवाद और गांधीवादी नारीवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

महात्मा गांधी ने महिलाओं को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए अहिंसात्मक संघर्ष और नैतिक मूल्यों पर आधारित एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इसके विपरीत, पश्चिमी नारीवाद ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए आंदोलन किया, जिसमें विभिन्न चरणों (waves) के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास किया गया।

2. नारीवाद : अवधारणा और विकास

नारीवाद को केवल एक सैद्धांतिक ढाँचे तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह एक सक्रिय सामाजिक आंदोलन है जिसका उद्देश्य लैंगिक असमानताओं को समाप्त करना है (Hooks, 2000)।

यह धारणा महत्वपूर्ण है कि महिलाओं की अधीनता जैविक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं के कारण उत्पन्न होती है (Beauvoir, 1952)। समय के साथ नारीवाद की विभिन्न धाराएँ विकसित हुईं, जैसे उदारवादी, समाजवादी, उग्र और सांस्कृतिक नारीवाद, जिनमें स्त्री-दमन के कारणों और समाधान को अलग-अलग दृष्टिकोणों से समझा गया है।

गांधीवादी नारीवाद एक ऐसी विचारधारा है जो महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता को नैतिकता, आत्मबल और अहिंसा के माध्यम से प्राप्त करने पर बल देती है। गांधी का मानना था कि महिलाएँ पुरुषों से अधिक नैतिक और सहनशील होती हैं, इसलिए वे समाज में परिवर्तन लाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

भारतीय संदर्भ में नारीवाद की विशेषता यह है कि इसमें जाति, वर्ग और धर्म जैसे तत्वों को भी शामिल किया जाता है, जिससे यह अधिक व्यापक और बहुआयामी बन जाता है (Kumar, 1993)।

3. पश्चिमी नारीवाद : वैचारिक आधार

पश्चिमी नारीवाद का विकास मुख्यतः यूरोप और अमेरिका में हुआ । पश्चिमी नारीवाद 18वीं–19वीं शताब्दी में शुरुआत हुआ । प्रथम लहर मतदान अधिकार के रूप में रहा जबकि 'द्वितीय लहर समानता और कार्यस्थल अधिकार के रूप में दिखाई दिया । तृतीय लहर पहचान, लैंगिक विविधता का रहा।

गांधीवादी नारीवाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विकसित हुआ । गांधी जी ने महिलाओं को सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन में भागीदार बनाया जहाँ इसने यह स्थापित किया कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं की स्वतंत्रता और विकास में बाधा उत्पन्न करती है (Beauvoir, 1952)।

यह विचारधारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समान अवसर और कानूनी अधिकारों पर विशेष बल देती है (Wollstonecraft, 1792)। शिक्षा, रोजगार, राजनीति और पारिवारिक जीवन में समानता इसकी प्रमुख मांग रही है।

पश्चिमी नारीवाद ने महिला मताधिकार, समान वेतन और प्रजनन अधिकार जैसे मुद्दों पर महत्वपूर्ण संघर्ष किया (Hooks, 2000)। हालांकि, इसकी आलोचना यह कहकर की जाती है कि यह कई बार गैर-पश्चिमी समाजों की सांस्कृतिक विविधताओं को पर्याप्त महत्व नहीं देता (Kumar, 1993)।

4. भारत में गांधीवादी नारीवाद : दार्शनिक पृष्ठभूमि

गांधीवादी नारीवाद महात्मा गांधी के नैतिक और सामाजिक चिंतन पर आधारित है (Gandhi, 1958)। गांधी जी ने महिलाओं को केवल अधिकारों की मांग करने वाली इकाई के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख शक्ति के रूप में देखा। गांधीवादी नारीवाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान विकसित हुआ । गांधी जी ने महिलाओं को सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन में भागीदार बनाया । उन्होंने महिलाओं में करुणा, सहनशीलता और अहिंसा जैसी विशेषताओं को समाज के नैतिक विकास के लिए आवश्यक माना (Joshi, 1988)। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी सामाजिक भूमिका का विस्तार हुआ (Forbes, 2020)।

गांधीवादी नारीवाद समानता को प्रतिस्पर्धा के रूप में नहीं, बल्कि पूरकता के रूप में देखता है (Kishwar, 1985)।

5 . अहिंसा और सत्य पर आधारित दृष्टिकोण

गांधीवादी नारीवाद का मूल आधार अहिंसा है। महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन के लिए हिंसा का सहारा लेने के बजाय नैतिक शक्ति का उपयोग करने की प्रेरणा दी जाती है।

नैतिक शक्ति का महत्व- गांधी के अनुसार, महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अधिक नैतिक शक्ति होती है, जो उन्हें सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बनाती है।

समानता लेकिन समानता की अलग व्याख्या- गांधी समानता के पक्षधर थे, लेकिन उन्होंने पुरुष और महिला की भूमिकाओं को पूरक माना, न कि प्रतिस्पर्धी।

सामाजिक सुधार पर बल- गांधीवादी नारीवाद केवल अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि समाज के नैतिक सुधार पर भी ध्यान देता है।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरता- महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया गया।

6. स्त्री-मुक्ति की अवधारणा : तुलनात्मक विश्लेषण

पश्चिमी नारीवाद में स्त्री-मुक्ति का अर्थ व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समान अधिकार और आत्मनिर्णय की क्षमता से जुड़ा है (Beauvoir, 1952)। इसके विपरीत, गांधीवादी नारीवाद स्त्री-मुक्ति को नैतिक उत्थान, आत्मबल और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है (Gandhi, 1958)।

जहाँ पश्चिमी नारीवाद पितृसत्ता के विरुद्ध संघर्ष और अधिकारों की प्राप्ति पर बल देता है, वहीं गांधीवादी नारीवाद संवाद, सुधार और नैतिक परिवर्तन के माध्यम से समाज में बदलाव की बात करता है (Kishwar, 1985)।

7. संघर्ष की पद्धति और साधन

पश्चिमी नारीवाद में कानूनी सुधार, नीतिगत हस्तक्षेप और सामाजिक आंदोलनों को प्रमुख साधन माना गया है (Hooks, 2000)। यह दृष्टिकोण राज्य और संस्थाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है।

प्रथम चरण (First Wave Feminism)- 19वीं और 20वीं शताब्दी में महिलाओं के मतदान अधिकार और संपत्ति अधिकार के लिए संघर्ष।

द्वितीय चरण (Second Wave Feminism)- 1960–1980 के बीच समान वेतन, शिक्षा और रोजगार के अवसरों पर जोर।

तृतीय चरण (Third Wave Feminism)- पहचान, विविधता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर ध्यान।

चतुर्थ चरण (Fourth Wave Feminism)- डिजिटल युग में लैंगिक न्याय, यौन उत्पीड़न और सामाजिक मीडिया के माध्यम से आंदोलन।

इसके विपरीत, गांधीवादी नारीवाद अहिंसा, सत्याग्रह और रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से परिवर्तन लाने पर बल देता है (Gandhi, 1958)। इसमें साधनों की शुद्धता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

8. परिवार, संस्कृति और समाज के प्रति दृष्टिकोण

पश्चिमी नारीवाद पारंपरिक परिवार व्यवस्था की आलोचना करता है और इसे कई बार स्त्री-दमन का साधन मानता है (Hooks, 2000)। इसके विपरीत, गांधीवादी नारीवाद परिवार को सामाजिक सुधार का आधार मानता है (Joshi, 1988)। यह दृष्टिकोण परंपराओं को पूर्णतः अस्वीकार नहीं करता, बल्कि उनमें सुधार की आवश्यकता को स्वीकार करता है।

9. गांधीवादी और पश्चिमी नारीवाद: तुलनात्मक विश्लेषण

समानताएँ-

- महिलाओं के अधिकारों की वकालत - दोनों विचारधाराएँ महिलाओं के अधिकारों और सम्मान की रक्षा के लिए कार्य करती हैं।
- लैंगिक समानता का उद्देश्य - दोनों का लक्ष्य समाज में समानता स्थापित करना है।
- सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता - दोनों मानते हैं कि समाज में परिवर्तन आवश्यक है।

भिन्नताए

गांधीवादी नारीवाद नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर आधारित था अहिंसा और सत्य ,पूरकता, सामूहिक कल्याण इसकी विशेषता था वहीं पश्चिमी नारीवाद राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण पर आधारित था। आंदोलन और विरोध पूर्ण समानता व्यक्तिगत अधिकारकानूनी और राजनीतिक संघर्ष इसकी विशेषता था ।

10. आलोचनात्मक विवेचना

पश्चिमी नारीवाद की आलोचना यह है कि यह कई बार भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामुदायिक जटिलताओं को पर्याप्त रूप से नहीं समझता (Kumar, 1993)। वहीं गांधीवादी नारीवाद की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह स्त्री के त्याग और सहनशीलता को अधिक महत्व देता है, जिससे व्यावहारिक संघर्ष कमजोर पड़ सकता है (Kishwar, 1985)।

- गांधीवादी नारीवाद की महिलाओं की पारंपरिक भूमिका को मजबूत करने का आरोप लगाया गया ।
- आधुनिक संदर्भ में सीमित प्रभाव दिखाई देना ।
- समानता की अस्पष्ट अवधारणा ये सब इसकी आलोचना का कारण बने '
- पश्चिमी नारीवाद की आलोचना
- अत्यधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर दिया गया ।
- विकासशील देशों की समस्याओं की अनदेखी किया गया. ।
- सांस्कृतिक विविधता की कमी ये सब बातें इसकी आलोचना काकारण बना ।

11. समकालीन भारत में प्रासंगिकता

- समकालीन भारत में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन लैंगिक असमानता और हिंसा जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं (Chauhan, 2023)।आज के भारत में दोनों दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं।
- पश्चिमी नारीवाद महिलाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है।
- गांधीवादी नारीवाद सामाजिक संतुलन और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में मदद करता है।
- ऐसी परिस्थितियों में पश्चिमी नारीवाद के अधिकार-आधारित दृष्टिकोण और गांधीवादी नारीवाद के नैतिक दृष्टिकोण दोनों की प्रासंगिकता बनी हुई है।
- भारत में नारीवाद का स्वरूप पश्चिमी और गांधीवादी दोनों विचारधाराओं से प्रभावित है।
- गांधीवादी दृष्टिकोण ग्रामीण और पारंपरिक समाज में अधिक प्रभावी है
- पश्चिमी नारीवाद शहरी और शिक्षित वर्ग में अधिक लोकप्रिय है
- दोनों का समन्वय भारतीय समाज के लिए अधिक उपयोगी हो सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

गांधीवादी नारीवाद और पश्चिमी नारीवाद दोनों ही महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए महत्वपूर्ण हैं। गांधीवादी नारीवाद नैतिकता, अहिंसा और सामूहिक कल्याण पर आधारित है, जबकि पश्चिमी नारीवाद व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता पर केंद्रित है।

इन दोनों विचारधाराओं का संतुलित समन्वय ही एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में सहायक हो सकता है ।यह अध्ययन दर्शाता है कि पश्चिमी और गांधीवादी नारीवाद दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। जहाँ पश्चिमी नारीवाद अधिकारों और समानता पर जोर देता है, वहीं गांधीवादी नारीवाद नैतिकता और सामाजिक संतुलन को प्राथमिकता देता है।

आधुनिक समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए इन दोनों विचारधाराओं का संयोजन आवश्यक है। इससे न केवल महिलाओं को अधिकार मिलेंगे, बल्कि समाज में संतुलन और सामंजस्य भी बना रहेगा।

यह अध्ययन दर्शाता है कि पश्चिमी और गांधीवादी नारीवाद दोनों ही स्त्री-मुक्ति के महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करते हैं। पश्चिमी नारीवाद अधिकारों और स्वतंत्रता पर बल देता है, जबकि गांधीवादी नारीवाद नैतिकता और सामाजिक समरसता को प्राथमिकता देता है।आधुनिक समाज में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए इन दोनों विचारधाराओं का संयोजन आवश्यक है। इससे न केवल महिलाओं को अधिकार मिलेंगे, बल्कि समाज में संतुलन और सामंजस्य भी बना रहेगा।

भारतीय संदर्भ में इन दोनों दृष्टिकोणों का संतुलित समन्वय ही स्त्री-सशक्तीकरण को अधिक प्रभावी और व्यापक बना सकता है।

References

1. Beauvoir, S. de. (1952). The second sex. Vintage Books.
2. Gandhi, M. K. (1958). The collected works of Mahatma Gandhi. Publications Division.
3. Hooks, B. (2000). Feminism is for everybody. South End Press.
4. Kishwar, M. (1985). Gandhi and women.
5. Kumar, R. (1993). The history of doing. Zubaan.
6. Wollstonecraft, M. (1792). A vindication of the rights of woman. Penguin.
7. Joshi, P. (1988). Gandhi on women. Navajivan.
8. Forbes, G. (2020). Lost letters and feminist history. Orient BlackSwan.
9. Chauhan, M. (2023). Women in Gandhian ideology. OrangeBooks.Gandhi, M. K. (1931).
10. The collected works of Mahatma Gandhi. Government of India.
11. Nussbaum, M. C. (2000). Women and human development. Cambridge University Press.
12. Tong, R. (2009). Feminist thought: A more comprehensive introduction. Westview Press.
13. Walby, S. (2011). The future of feminism. Polity Press.
14. Jayawardena, K. (1986). Feminism and nationalism in the Third World. Verso.

❑❑❑